

उपन्यास का समाजशास्त्र और महाभोज का मूल्यांकन

डॉ. सन्तोष कुमार पाण्डेय

सहायक आचार्य

वीरभूमि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय महोबा उ० प्र०

truthonly88@gmail.com

'उपन्यास' साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा रही है। इसे अनेक विद्वानों ने परिभाषित करने का प्रयास किया है। आर बर्टर के अनुसार "उपन्यास गद्य में रचित कवि के समकालीन जीवन का अध्ययन है, जिसकी रचना लेखक समाज के उत्थान-पतन की भावना से अनुप्राणित होकर करता है।"¹ क्रोस के अनुसार-"उपन्यास से अभिप्राय उस गद्यमय गल्पकथा से है जिसमें वास्तविक जीवन का यथार्थ चित्रण रहता है।"² मिशेल जेराफा ने लिखा है-"उपन्यास ऐसी कला है जिसमें मनुष्य सामाजिक और ऐतिहासिक दृष्टि से निरूपित होकर सामने आता है।"³

दूसरे कलारूपों की तुलना में उपन्यास का स्वरूप समाज पर अधिक निर्भर होता है और उसका विकास समाज के इतिहास के साथ होता है। लेकिन यह भी सच है कि वह एक कला है, केवल सामाजिक दस्तावेज नहीं, इसलिए सामाजिक यथार्थ जीवन के अनुभव और इतिहास की गति रचनाकार की सृजनशीलता से पुनर्रचित होकर ही उपन्यासों में आते हैं।